International Journal of Academic Research and Development

International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 225-227

राघवोल्लासमहाकाव्य में रामभक्त अहल्या

मनीष कुमार त्रिपाठी

शोध छात्र, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, गङ्गानाथ झा परिसर, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

पाँच कन्याओं में ज्येष्ठा, महर्षि गौतम की पत्नी तथा राजा जनक के पुरोहित षतानन्द की माता 'अहल्या' का आख्यान भारतीय समाज तथा साहित्य में अति प्रसिद्ध है। 'हल्य' का अर्थ है– कुरूप। कुरूप न होने के कारण अर्थात् अप्रतिम रूपवती होने के कारण इनका नाम 'अहल्या' रखा गया था। भारतीय जन–साहित्य में प्राचीन युग से प्रचलित इस आख्यान के प्राचीनतम संकेत, जिन्हें इसका आधार भी कहा जा सकता है, हमें ब्राह्मण ग्रन्थों–षतपथब्राह्मण, जैमिनीय ब्राह्मण एवं षट्–विंषब्राह्मण में तथा सूत्रग्रन्थों–लाट्यायन श्रौतसूत्र एवं द्राह्यायण श्रौतसूत्र में मिलते हैं। शिष्ट साहित्य में यह सर्वप्रथम आख्यान के रूप में महर्षि बाल्मीकि के रामायण में मिलता है। रामायण में राम के पतित पावन अभियाान का प्रथम सोपान अहल्या प्रसंग ही है, जहाँ से उनके विविध अभियानों की शुरुआत होती है। रामायण में यह आख्यान दो स्थलों पर आया है–बालकाण्ड और उत्तरकाण्ड में। मुख्य आख्यान बालकाण्ड ही है, उत्तरकाण्ड में तो प्रसंगविशेष में आवश्यकतावष उसका उल्लेख किया गया है। बालकाण्ड में भाग यह आख्यान महर्षि विश्वामित्र ने श्रीराम को सुनाया है। राजा जनक के एक वृहद् यज्ञ समारोह में भाग लेने के लिए मिथिला जाते समय मार्ग में मिथिला के समीप एक निर्जन आश्रम को देखकर राम ने महर्षि से पूछा–''यह किसका आश्रम है? और क्यों मुनिवर्जित है?–

> मिथिलोपवने तत्र आश्रमं दृष्य राघवः।
> पुराणं निर्जनं रम्यं पप्रच्छ मुनिपंगवम्।।
> इदमाश्रमसंकाषं किं न्विदं मुनिवर्जितम्।
> श्रोतुमिच्छामि भगवन् कस्यायं पूर्व आश्रमः।।[1]

राम की इस जिज्ञासा के परिहारार्थ ही विश्वामित्र ने उस स्थान से सम्बद्ध समस्त इतिवृत्त सुनाया है। यही सम्पूर्ण आख्यान ब्राह्मण ग्रन्थों, सूत्रग्रन्थों, रामायण, महाभारत,पुराण आदि में जहाँ भी उल्लिखित है, उनमें स्थूल अथवा सूक्ष्म रूप में अन्तर अवश्य दृष्टिगत होता है। रामायण की ही पश्चिमोत्तरीय, दक्षिणात्य और बंगीय शाखाओं में भी यत्र–तत्र पर्याप्त अन्तर दिखाई देता है। स्वयं रामायण के बालकाण्ड और उत्तरकाण्ड के अहल्या आख्यानों का रूप पर्याप्त मात्रा में भिन्न है। सामान्य जनमानस में आज अहल्या आख्यान का जो रूप प्रचलित है वह निश्चित ही एकान्त रूप से बाल्मीकीय रामायण का ही नहीं है। उनमें पुराणों का लोकप्रचलित रूप भी आकर मिल गया है। क्योंकि बाल्मीकीय रामायण में गौतम के शाप से अहल्या के शिला रूप में परिणत हो जाने का उल्लेख नहीं है और न ही राम–चरणों के स्पर्श से उनके उद्धार का। बल्कि वहाँ केवल लोगों की दृष्टि से अदृश्य रहकर आश्रम की सीमा में ही तपस्या करने और राम के दर्शन से शाप–मुक्ति होने का वर्णन है।
पुराण आदि में अहल्या आख्यान से सम्बन्धित विविधरूपता इस बात का संकेत करती है कि इस आख्यान का विकास भिन्न–भिन्न युगों की, भिन्न–भिन्न प्रदेशों की विविध परिस्थितियों एवं विविध रूपों में हुआ है। एक युग, एक प्रदेश एवं एक ही परिस्थिति में किसी आख्यान में विविरूपता सम्भव नहीं होती। परन्तु जो रूप सर्वाधिक प्रचलित होता है, वह अधिक समय तक स्थायी बना रहता है और युगों तक चलता रहता है। किन्तु आख्यान के जिस रूप का विकास किसी युग की विशेष परिस्थितियों में होता है, वह न तो उतना प्रचलित ही होता है और न स्थायी ही बना रहता है।
अहल्या आख्यान के इन विविध रूपों को उपजीव्य मानकर लिखे गये संस्कृत साहित्य के महाकाव्यों में भी इस आख्यान से सम्बन्धित इतिवृत्त में पर्याप्त भिन्नता देखी जाती है। प्रायः महाकाव्यकारों ने तो अहल्या प्रसंग को अपने महाकाव्य में स्थान भी नहीं दिया है। जिसका कारण सम्भवतः सामान्य जनमानस में प्रचलित अहल्या का दुराचारिणी, व्यभिचारिणी स्वरूप है। इसके अतिरिक्त ऐसे महाकाव्यप्रणेता भी हैं जिन्होंने अहल्या आख्यान का अत्यन्त संक्षिप्त वर्णन किया है तथा कुछ ऐसे हैं जिन्होंने इस आख्यान को पर्याप्त अवकाश दिया है। इनमें से एक हैं–'अद्वैतयति'। जिन्होंने रामकथा पर आधारित राघवोल्लास महाकाव्य का प्रणयन किया और एक सम्पूर्ण सर्ग में अहल्या के इतिवृत्त को कहा है। अद्वैतयति कृत 'राघवोल्लास महाकाव्य' राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, मानित विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के गंगानाथ झा परिसर इलाहाबाद से वर्ष 2011 में डॉ0 रामकिशोर झा जी द्वारा सम्पादित हुआ। रामकथा पर आधारित इस द्वादशसर्गात्मक महाकाव्य में राम–जन्म से लेकर राम–सीता के विवाहोपरान्त अयोध्या प्रत्यागमन तक की ही कथा वर्णित है। राघवोल्लास महाकाव्य के प्रणेता अद्वैतयति का मूल नाम मुरारि था, जिन्होंने आचार्यवर्य दिगम्बर श्रीरामकृष्णाश्रम गुरु से दीक्षा ग्रहण की और अद्वैतयति के नाम से जाने गये। इन्होंने काशी में रहकर राघवोल्लास महाकाव्य की रचना की। इनकी अमृतमयी वाणी को सुनकर लोग श्रमरहित हो जाते थे–

> अद्वैतनामाद्य विहाय कामान् करोति काष्यामनिषं निवासम्।
> यद्वाक्यपीयूषरसेन सिक्ताः श्रमैर्विमुक्ता जनता भवन्ति।।[2]

राघवोल्लास महाकाव्य की सम्पूर्ण कथा माता कौशल्या द्वारा सुमित्रा को सुनाये जाने के रूप में वर्णित है, जो महाकाव्य की अपनी विशेषता है। उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर इस महाकाव्य का रचनाकाल 16वीं शताब्दी निश्चित किया गया है। जैसा कि ग्रन्थ सम्पादक ने भी भूमिका में स्पष्ट किया है।
राघवोल्लास महाकाव्य के 'अहल्या स्तुति' नामक सम्पूर्ण सप्तम सर्ग में अहल्या से सम्बन्धित इतिवृत्त प्राप्त होता है। षष्ठ सर्ग के अन्त में निशाचरी ताडका, सुबाहु और मारीच वध के अनन्तर मिथिला नरेश राजा जनक के बुलावे पर गुरु विश्वामित्र के साथ श्रीराम और लक्ष्मण के मिथिला प्रस्थान के समय मार्ग में फलों के समूह से झुके हुए वृक्षों, लताओं एवं फैले हुए पुष्पों से संकुल आश्रम को देखकर थकान रहित राम के द्वारा–''यह किसका आश्रम है?'' इस प्रकार पूछे जाने पर गुरु विश्वामित्र के द्वारा अहल्या की कथा सुनायी गयी

है तथा श्रीराम की चरण धूलि से अहल्या की मुक्ति का मार्ग बतलाते हुए उनके उद्धार की प्रार्थना की गई है–

अत्राभवत्पूर्वमपूर्वकर्मा धर्माश्रयो राघव! गौतमाख्यः।
स्पृष्टास्य दुष्टाचरणेन कान्ता शक्रेण शान्तापि च तेन शप्ता।।
स्पर्षो यदि स्याद् रजसः पदस्ते पुण्यैरगण्यैरपि दुर्लभस्य।
दीनेश! तस्या भविता विमोक्षः पाषाणभावादतिदुःखहेतोः।।[3]

तत्पश्चात् श्रीराम अहल्या के उद्धार के लिए आगे बढते हैं और उनके अत्यन्त पूज्य चरण के नाखून के अग्रभाग में संलग्न धूलि के स्पर्श मात्र से वह शिला शुद्ध हो जाती है और अहल्या उसी समय अपने मूल स्वरूप को प्राप्त करती है–

स्पृष्टा वरिष्टाङ्घ्रिनखाङ्कुरेण रामेण चित्रं श्रृणु पावनेन।
जाता शिला याऽतिमलावरुद्धा शुद्धा तदैवाप पुनः स्वरूपम्।।[4]

यहाँ यह विशेष द्रष्टव्य है कि अहल्याख्यान ब्राह्मण ग्रन्थों, सूत्रग्रन्थों, पुराणादि में जहाँ कहीं भी वर्णित है, वहाँ अहल्या उद्धार के पश्चात् राम–अहल्या संवाद का प्रायः अभाव देखा जाता है। जबकि बाल्मीकि रामायण में महर्षि गौतम द्वारा अहल्या को शाप से उद्धार के लिए राम के आगमन और उनके आतिथ्य सत्कार को ही शापमुक्ति का उपाय बताया गया है–

इह वर्ष सहस्त्राणि बहूनि निवसिष्यसि।
वातभक्षा निराहारा तप्यन्ती भस्मशायिनी।।
अदृश्या सर्वभूतानाममाश्रमेऽस्मिन् वसिष्यसि।
यदात्वेद् वनं घोर रामो दशरथात्मजः।।
आगमिष्यति दुर्धर्षस्तदा पूता भविष्यसि।
तस्यातिथ्येन दुर्वृन्ते लोभमोक्षविवर्जिता।
मत्सकाषं मुदा युक्ता स्र्व वपुर्धारयिष्यसि।।[5]

प्रायः सभी रामकथाश्रित महाकाव्य प्रणेताओं ने लोकप्रचलित अहल्या के दुराचारिणी, व्यभिचारिणी रूप को ध्यान में रखकर उनके कृत्य के बदले महर्षि गौतम द्वारा उन्हें शाप दिये जाने को प्राधान्येन चित्रित किया है। श्रीराम के चरण–रज से उनकी षापमुक्ति एवं श्रीराम के आतिथ्य सत्कार के विषय को अर्थात् श्रीराम–अहल्या संवाद या उनकी राम–स्तुति को प्रमुखता नहीं दी है। जबकि अद्वैतयति ने राघवोल्लास के षष्ठ सर्ग के अन्त में गुरु विश्वामित्र के द्वारा संक्षिप्त रूप में समस्त अहल्या वृत्तान्त को कहलाकर तथा श्रीरामचन्द्र के द्वारा उनके उद्धार के पश्चात् सम्पूर्ण सप्तम सर्ग में अहल्या की राम स्तुति का सजीव चित्रण किया है जो निःसन्देह अनुकरणीय है।
बाल्मीकीय रामायण में श्रीराम और लक्ष्मण अहल्या के उद्धार के पश्चात् मूलरूप को प्राप्त अहल्या के चरणों को स्पर्श करते हैं तथा अहल्या भी महर्षि गौतम के वचनों का स्मरण करके उन दोनों भाइयों का आतिथ्य सत्कार करती हैं। इस प्रकार वहाँ शापमुक्ति के अनन्तर उन्हें महर्षि गौतम की पत्नी अर्थात् गुरुमाता के रूप में श्रीराम और लक्ष्मण ने श्रेष्ठता प्रदान की है। किन्तु राघवोल्लास में उद्धार के पश्चात् श्रीराम के सम्मुख खड़ी रामभक्त अहल्या के दर्शन होते हैं, जो अपने कृत्य को लेकर क्षमाप्रार्थिनी है। जिसकी आँखें अश्रुपूरित हैं और जो स्तुति या आभार व्यक्त करने में भी स्वयं को अक्षम पा रही है–

सवेपथुः स्विन्नतनुः प्रमोदादुभिन्नरोमावलिरस्रचक्षुः।
प्रवक्तुमप्यक्षरमप्रगल्भा क्षणं तदासीन्महिला मुनेः सा।।[6]

कुछ क्षण के पश्चात् अहल्या श्रीराम की स्तुति प्रारम्भ करती है और 'स एव रामो भगवानसि त्वम्' वाक्य को बार–बार दुहराती हुई रामचन्द्र की विस्तृत स्तुति करती है। साथ ही वह स्वयं को दोषी बतलाना भी नहीं भूलती–

योषित्स्वभावदतिमूढबुद्धिः पदवीक्षणाद् वेदि्म तव स्वरूपम्।
योऽगोचरः सर्वंचराचराणां स एव रामो भगवानसि त्वम्।।[7]

राघवोल्लास महाकाव्य के प्रणेता अद्वैतयति की अपनी विशेषता है कि उनके आराध्य श्रीराम यद्यपि मानवीय गुणों से युक्त सामान्य पुरुष की भाँति समुपस्थित हैं किन्तु उन्होंने अपने पात्रों के मुख से श्रीराम के दैवीय स्वरूप को अवश्य स्मरण कराया है। माता कौशल्या, महाराज दशरथ, गुरु विश्वामित्र, अहल्या, सीता आदि के द्वारा उन्होंने सीता के विष्णु अवतार के स्वरूप का वर्णन किया है। अहल्या प्रसंग में भी ऐसा ही देखने को मिलता है। श्रीराम की आराधना करते हुए अहल्या यह कहना नहीं भूलती हैं कि पृथ्वी तल का भार हटाने के लिए ही आपने अवतार प्राप्त किया है। आप ही उस समस्त लोक के पालक तथा संहारक हैं। नृसिंह रूप धारण कर आपने ही अपने सेवक के कष्ट को दूर किया था। वामन रूप धारण कर आपने ही तीनों लोकों को तीन पैरों से मापा था। समुद्र मन्थन के समय देवताओं के लिए आपने ही कूर्म अवतार धारण कर मन्दराचल को अपने ऊपर धारण किया था–

भारापहारं प्रविधातुमेतत् क्षोणीतलस्याधिगतोऽवतारम्।
मयावशादत्र विचित्ररूपः स एव रामो भगवानसि त्वम्।।
जतो यतोऽयं सकलोऽपि लोकस्तस्यापि पोषो यत एव नाशः।
ब्रह्मदिरूपं प्रविधाय देवः स एव रामो भगवानसि त्वम्।।
क्लेशान्निहन्तुं निजसेवकस्य कामांष्च दातुं सकलान्नृसिंहः।
स्तम्भादहो! यो जननं प्रपेदे स एव रामो भगवानसि त्वम्।।
कालेऽम्बुराषेर्मथनस्य नाथ! कूर्मोऽपि षर्मप्रतिपादनाय।
पृष्ठेऽदरं मन्दरमुद्दधार स एव रामो भगवानसि त्वम्।।[8]

इस प्रकार राम की सुदीर्घ स्तुति करके अहल्या अन्त में ''आप मुझ अपराधिनी, दीना की रक्षा करो'' कहते हुए श्रीराम के चरणों में गिर जाती है। राम अहल्या को उठाते हुए सुखपूर्वक अपने स्वामी के साथ जीवन–यापन का आशीर्वाद देते हैं–

त्वं याहि सौख्यं दयितेन साकं संचिन्तयन्ती चरणौ मदीयौ।
त्वया स्तवोऽयं विहितोऽस्य पाठात्कामाप्तिरस्तु प्रियमाह रामः।।[9]

यही राघवोल्लास में वर्णित अहल्या प्रसंग का संक्षिप्त वर्णन है जो निःसन्देह अहल्या की रामभक्ति का सर्वोत्तम निदर्शन है। अहल्या–मुख से अद्वैतयति ने अपने आराध्य श्रीराम की विस्तृत स्तुति की है तथा उनके परम–पावन दैवीय स्वरूप के दर्शन कराये हैं।
बाल्मीकीय रामायण में वर्णित अहल्या आख्यान से यह इतिवृत्त कुछ अंशों में भिन्न ही है। यथा– अहल्या को यहाँ अदृश्य होने का नहीं अपितु शिला हो जाने का शाप गौतम ऋषि से प्राप्त होता है तथा जिसकी शापमुक्ति श्रीराम के चरण–रज के संयोग से सम्भव होती है। यहाँ बाल्मीकि रामायण के अनुसार शापमुक्ति के पश्चात् श्रीराम तथा लक्ष्मण अहल्या का चरण स्पर्श नहीं करते अपितु स्वयं अहल्या ही श्रीराम के चरणों में गिरती है। यदि श्रीराम के मानवीय रूप को ध्यान में रखें तो यह निःसन्देह अनुचित दृश्य होगा किन्तु जिस प्रकार अहल्या ने बाद में श्रीराम के दैवीय स्वरूप की स्तुति प्रारम्भ की उसे देखकर तो यह निश्चय ही कहा जा सकता है कि अद्वैतयति का लक्ष्य श्रीराम को मानवीय नहीं अपितु विष्णु अवतार के रूप में प्रस्तुत करना है। अतः अहल्या का रामचरणों में गिरना उचित ही है। सामान्य जनमानस में प्रचलित अहल्या के दुराचारिणी चरित्र को राम–भक्त के रूप में चित्रित करना अद्वैतयति की अपनी

विशेषता है। राघवोल्लास का अहल्या वृत्तान्त बाल्मीकीय रामायण की अपेक्षा गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस के अधिक निकट दिखाई देता है। यद्यपि दोनों ही रचनायें 16वीं शताब्दी की हैं तथा दोनों की ही रचना काशी में ही हुई है, इस कारण वर्णन साम्यता सम्भव है। किन्तु जहाँ रामचरितमानस आज जगतप्रसिद्ध रचना के रूप में ख्यातिलब्ध है वहीं हाल ही में सम्पादित राघवोल्लास महाकाव्य से समस्त सुधीजन अभी परिचित भी नहीं हो सके हैं। ऐसी आशा है कि शीघ्र ही यह महाकाव्य संस्कृत जगत में विलम्ब से ही सही पर प्रतिष्ठित होगा।

सन्दर्भ–सूची

1. बाल्मीकीय रामायण–1.48.11–12, गीताप्रेस गोरखपुर (2012)
2. राघवोल्लासमहाकाव्य 12/184, डॉ0 रामकिशोर झा, गंगानाथझा परिसर, इला0।(2011)
3. वही 6/46,47
4. वही 6/49
5. बाल्मीकीय रामायण–1.48.29–32, गीताप्रेस गोरखपुर (2012)
6. राघवोल्लासमहाकाव्य 7/3, डॉ0 रामकिशोर झा, गंगानाथझा परिसर, इला0।(2011)
7. वही 7/17
8. वही 7/19–22
9. वही 7/93